क. व्यवस्था के अनुसार कैसे जिएँ:

- **हिंसा का प्रबंधन कैसे करें (निर्गमन 21:1-32)**
  - वाचा संहिता इब्रानी समाज के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं को विनियमित करके शुरू होती है:
    - (1) *दासत्व (निर्गमन 21:2-11):* सातवें वर्ष के बाद पुरुषों को रिहा कर दिया जाता था।; महिलाएँ, यदि अविवाहित हैं, तो वे भी स्वतंत्र थीं।; यदि पुरुष चाहे तो दास बना रह सकता था।
    - (2) *मृत्युदंड (निर्गमन 21:12-17):* जानबूझकर हत्या करने वाले के लिए; अपने माता-पिता को चोट पहुँचाने या उन्हें कोसने वाले के लिए; अपहरणकर्ता के लिए
    - (3) *चोट (निर्गमन 21:18-32):* आर्थिक मुआवज़ा देने का दायित्व; यदि गर्भपात हो जाता है, तो न्यायाधीश और महिला (अपने पति के साथ) जुर्माना लगाते हैं।
  - ये सभी नियम लोगों के बीच दुर्व्यवहार और हिंसा को रोकने का प्रयास करते हैं।
- **समाज में कैसे जिएँ (निर्गमन 21:33-23:19)**
  - परमेश्वर हमें सिर्फ़ "बुनियादी" नियम देकर संतुष्ट नहीं था कि हम उन्हें अपनी मर्ज़ी से लागू करें। उसने ठोस उदाहरण देने का भी ध्यान रखा ताकि हम उन्हें सही तरीके से लागू कर सकें।
  - इन उदाहरणों में शामिल हैं, जानवरों पर जानवरों का हमला (निर्गमन 21:35-36); उधार देना और किराये पर देना (निर्गमन 22:14-15); विवाह-पूर्व संबंध (निर्गमन 22:16), आदि।
  - कमजोर और हाशिए पर पड़े लोगों की रक्षा करने पर विशेष जोर दिया गया है, लेकिन उन्हें अन्यायपूर्ण लाभ दिए बिना - यानी, उन्हें लाभ पहुंचाने या नुकसान पहुंचाने के लिए न्याय को विकृत किए बिना (निर्गमन 22:21-23; 23:2-3, 6)।
  - परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक वाचा होने के नाते, इन नियमों में यह भी शामिल था कि हमें उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। सब्त के विश्राम के अलावा, उन पर्वों को मनाने का दायित्व भी था जो हमें पाप से मुक्ति, ईश्वरीय सुरक्षा और हमारे लिए प्रतीक्षा कर रहे गौरवशाली भविष्य की याद दिलाते हैं।
- **विजय कैसे प्राप्त करें (निर्गमन 23:20-33)**
  - परमेश्वर ने अब्राहम को कनानियों का देश क्यों नहीं दिया? “क्योंकि अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ था। “ (उत्पत्ति 15:16)।
  - चार शताब्दियों के अनुग्रह के बाद भी, कनानियों ने अपना आचरण नहीं बदला। अब समय आ गया था कि देश को इस्राएल को सौंप दिया जाए... शांतिपूर्वक तरीके से! (निर्गमन 13:17)
  - यदि परमेश्वर उन्हें बिना लड़े ही मिस्र से बाहर ला सकता था, सागर को दो भागों में विभाजित कर सकता था, चमत्कारिक रूप से उन्हें भोजन दे सकता था, और अपने दूत द्वारा उनका मार्गदर्शन कर सकता था... तो क्या वह उन्हें बिना लड़े ही कनान नहीं दे सकता था?
    - (1) परमेश्वर इस्राएल को बताता है कि उसे क्या करना है
      - (a) जो कुछ वह कहे वह करना, ताकि परमेश्वर उनके शत्रुओं का शत्रु और उनके द्रोहियों का द्रोही बन जाए (23:21-22)
      - (b) केवल परमेश्वर की सेवा करना, ताकि वह सभी बीमारियों को दूर कर दे (23:24-26)
      - (c) कनानियों के साथ कोई संधि न करना, ताकि उनके देवताओं की पूजा न करो (23:32-33)
    - (2) परमेश्वर इस्राएल को बताता है कि वह क्या करने जा रहा है
      - (a) वह उनकी रक्षा करने और उन्हें अंदर लाने के लिए अपना दूत भेजेगा [सुरक्षा] (23:20)
      - (b) दूत उनके आगे-आगे चलेगा और उन्हें कनान में ले आएगा [दिशा] (23:23)
      - (c) वह निवासियों में भय पैदा करेगा (23:27)
      - (d) वह उन्हें भगाने के लिए बर्रों को भेजेगा (23:28)
      - (e) वह उन्हें धीरे-धीरे बाहर निकालेगा (23:29-30)
      - (f) वह उन्हें इस्राएल के हाथ में तब तक सौंपता रहेगा जब तक कि वे भूमध्य सागर से लेकर फरात नदी तक प्रभुत्व नहीं बना लेते (23:31)

ख. व्यवस्था को कैसे समझें:

- **प्रतिशोध की व्यवस्था।**
  - जब यीशु ने पहाड़ी उपदेश दिया, तो उसने प्रतिशोध की व्यवस्था को समाप्त कर दिया था (मत्ती 5:38-42) ... या नहीं?
  - "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था... परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ" वाक्यांश ने किसी भी व्यवस्था को समाप्त नहीं किया (यीशु ने "तू हत्या न करना" या "तू व्यभिचार न करना" के लिए भी यही वाक्यांश का इस्तेमाल किया था, परन्तु उसका इरादा कभी भी उन्हें समाप्त करने का नहीं था)। वास्तव में, यीशु ने हमेशा व्यवस्था का विस्तार किया, उसमें सुधार किया, और उसे उसका सच्चा अर्थ दिया।
  - प्रतिशोध के नियम का वास्तविक उद्देश्य यह कभी नहीं था कि किसी व्यक्ति को दूसरे को नुकसान पहुंचाने के कारण अपनी आंख या हाथ खोना पड़े।
  - यह नियम बदला लेने, खूनी झगड़े को रोकने और बिना पूर्व जांच के प्रतिशोध को रोकने के इरादे से बनाया गया था। न्यायाधीशों द्वारा क्षति का आकलन किया जाना था, और फिर उचित मौद्रिक मुआवजा निर्धारित कर उसका भुगतान किया जाना था। यह प्रथा लोगों को न्याय अपने हाथ में लेने से रोकने के लिए शुरू की गई थी। न्याय तो होना ही था, लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार।
- **पुरस्कार और दंड।**
  - बदला लेने की चाहत हममें गहराई से समाई हुई है। और यह हमेशा हमारे साथ हुए अन्याय के अनुपात से कहीं ज़्यादा होती है: "अगर उसने मेरे साथ ऐसा किया है, तो मैं उसके साथ और भी ज्यादा बुरा करूँगा।"
  - यीशु हमें अपनी इच्छा के विपरीत करने के लिए आमंत्रित करता है: बुराई का बदला भलाई से देना (मत्ती 5:44)। तो फिर न्याय कहाँ है? अपराधी को उसका दण्ड कौन देगा जिसके वह क्या योग्य है?
  - परमेश्वर हमें यह नहीं बताता है कि हमलावर को सज़ा नहीं दी जाएगी, न ही यह कि उसके किसी कृत्य का बदला लिया जाएगा। लेकिन वह हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि बदला लेना उसका काम है (रोमियों 12:19-21)।
  - यद्यपि वाचा संहिता में व्यक्तिगत बदला लेने को सहन किया गया है, लेकिन दुष्प्रयोग को रोकने के लिए न्यायिक प्रणाली बनाकर इसे रोका गया था (निर्गमन 21:12-13, 22; 22:8-9)।
  - कोई भी व्यक्ति एक साथ न्यायाधीश, जूरी और लागू करने वाले की भूमिका नहीं निभा सकता। अगर सज़ा देनी ही है, तो उसे निष्पक्ष न्यायिक प्रक्रिया के ज़रिए दिया जाना चाहिए। और मसीह सर्वोच्च और अंतिम न्यायाधीश होगा।